"अर्न्तमुखी तथा बहिर्मुखी व्यक्तित्व वाले किशोर विद्यार्थियों की दुश्चिंताओं एवं व्यावसायिक रूचियों का अध्ययन"

''बेटी बचाओ, बेटी पढ़ाओ''

शिक्षा शास्त्र में पीएच.डी. की उपाधि हेतु

प्रस्तावित

शोध प्रारूप

निर्देशिका

JV'n प्रो. डॉ. यामिनी पालीवाल

शोधार्थी

JV'n ऋतु बंसल

फैकल्टी ऑफ एज्यूकेशन मैथोडोलॉजी

ज्योति विद्यापीठ महिला विश्वविद्यालय

जयपुर (राज.)

2018–19

शोध अनुक्रमणिका

क्र.सं.	विषय वस्तु	पृष्ठ संख्या
1.	शोध समस्या की सम्प्रत्यात्मक पृष्ठभूमि	
2.	समस्या का औचित्य	
3.	शोध समस्या के उद्देश्य	
4.	शोध परिकल्पनाऐं	
5.	सम्प्रत्ययों की व्याख्या	
6.	शोध विधि	
7.	न्यादर्श एवं न्यायदर्शन	
8.	प्रदत्तों के स्त्रोत	
9.	अध्ययन में प्रयुक्त चर व उनका औचित्य	
10.	तथ्य संकलन हेतु प्रयुक्त उपकरण	
11.	प्रदत्त विश्लेषण विधि एवं परिसीमाएँ	
12.	शैक्षिक फलितार्थ	
13.	शोध प्रक्रिया	
14.	शोध अभिकरणों का संगठन	
15.	संदर्भ सूची	

शोध समस्या :–

"अन्तर्मुखी तथा बहिर्मुखी व्यक्तित्व वाले किशोर विद्यार्थियों की दुश्चिंताओं एवं व्यावसायिक रूचियों का अध्ययन "

सम्प्रत्यात्मक पृष्ठभूमि :–

परिवर्तन प्रकृति का शाश्वत सत्य है। मानव स्वभाव से गतिशील प्राणी है। मानव समाज में परिवर्तन होता रहता है। किसी भी व्यवस्था या समाज में समय के अनुसार परिवर्तन अनिवार्य है। समय के साथ हो रहे इन परिवर्तनों के प्रति अपनी आँखे खुली न रखने वाला व्यक्ति भविष्य में अपना अस्तित्व खो सकता है। समाज को परिवर्तनशील बनाने का सामर्थ्य शिक्षा द्वारा संभव है। बेहतर शिक्षा सभी के लिए जीवन में आगे बढ़ने और सफलता प्राप्त करने के लिए बहुत आवश्यक है। विदेशी काल में शिक्षा सर्वांगीण विकास पर आधारित नहीं थी। परन्तु अब शिक्षा के लक्ष्ययुक्त बनने से विद्यार्थियों में अपने लक्ष्य को प्राप्त करने की रूचि, लालसा दिखाई देती है। उसी योग्यता के अनुसार छात्र उस लक्ष्य को प्राप्त करने में अपनी क्षमताओं को व्यय करते हैं।

राष्ट्रीय शिक्षा नीति (1986) में पाठयक्रमों में व्यावहारिक शिक्षा को जोड़ने पर बल दिया गया। जिससे बालको को बेहतर शिक्षा के साथ रोजगार भी मिले। यही शिक्षा बालकों में आत्मविश्वास विकसित करती है और एक अच्छे व्यक्तित्व के निर्माण में सहायक होती है।

व्यक्तित्व को अंग्रेजी में Personality कहते है जो लैटिन शब्द Persona से बना है। जिसका अर्थ मुखौटा होता है। व्यक्तित्व एक में एक व्यक्ति की सारी खूबिया, अच्छे व बुरी सभी गुण आते हैं।

वुडवथ्र के अनुसार :– व्यक्तित्व व्यक्ति के सम्पूर्ण व्यवहार की विशेषता है। जिसका प्रदर्शन उसके विचारों की आदत व्यक्त करने के ढ़ंग, अलिवृत्ति एवं रूचि कार्य करने के ढ़ंग और जीवन के प्रति उसके दार्शनिक विचारधारा के रूप में किया जाता है।

मन के अनुसार :– व्यक्तित्व एवं व्यक्ति के गठन, व्यवहार तरीको, रूचियों, दृष्टिकोणों, क्षमता और तरीको का सबसे विशिष्ट संगठन है।

बालक के आचार–विचार, व्यवहार क्रियाँए और गतिविधियों में बालक का व्यक्तित्व झलकता है। एक बालक के व्यक्तित्व को प्रभावित करने में कुछ विशेष तत्वों का हाथ रहता है। इनमें आनुवांशिकता, शारीरिक गठन व स्वास्थ्य तथा स्त्रावी ग्रन्थियाँ आती है।

इसके अतिरिक्त बालक के व्यक्तिव को घर या परिवार, माता–पिता विद्यालय सभी प्रभावित करते है। उदाहरण के तौर पर माता–पिता के विवेकशील और व्यवहार कुशल रहने तथा सही ढ़ंग से देखभाल करने पर उसके व्यक्तित्व का विकास उचित ढ़ंग से होगा। ऐसा बालक आत्मविश्वास से परिपूर्ण होगा।

चुंग ने व्यक्तित्व को तीन वर्गों में बांटा है :–

1. अंतर्मुखी **2. बहिर्मुखी** **3. मध्यमुखी**

ऐसे बालक जिनके व्यक्तिव का विकास उचित ढ़ंग से हुआ तथा जो आत्मविश्वासी है वो बालक बहिर्मुखी होंगे। इसके विपरीत जिन बालकों के माता–पिता द्वारा आवश्यकताओं की उचित पूर्ति न करने व पर्याप्त स्नेह न होने के कारण बालक कर्महीन व निराशावादी बन जाता है। ऐसा बालक हीनभाव या असुरक्षित भावना से पीड़ित रह सकता है। तथा आत्मविश्वास की कमी ऐसे बालकों की दब्बू स्वभाव का तथा अन्तर्मुखी बनाती है।

युग के अनुसार :– अन्तर्मुखी व्यक्ति शर्मिले, आत्मकेन्द्रित, आत्मसचेत तथा असामाजिक होते है। वे साहसिक कार्य करने वाले नहीं होते, अपने आप में केन्द्रित रहना तथा दिन में सपने देखना इनकी मुख्य विशेषता होती है।

बहिर्मुखी व्यक्ति मिलनसार , साहसी, सहयोगी होते है तथा चिंताओं से मुक्त रहते है। उनकी वाणी में प्रवाह होता है। दूसरों के प्रति मैत्री व्यवहार होता है। ऐसे व्यक्ति अच्छे नेता और सामाजिक कार्यकर्ता बनते है।

अन्तर्मुखी व्यक्तित्व वाले बालकों की विशेषताए :–

ऐसे बालकों का व्यक्तित्व चिन्तनशील होता है। ऐसे बालकों का स्वभाव, आदतें, लक्षण व रूचि बाह्यरूप में प्रकट नहीं होती है। इनका विकास बाह्यरूप से होकर आन्तरिक रूप से होता है। ऐसे बालक एकाकी रहना पसन्द करते है तथा सदैव चिन्ताग्रस्त रहते हैं। उन्हें ज्यादा हंसी मजाक करना पसन्द नहीं होता है तथा वे व्यवहार कुशल नहीं होते है। इसके अतिरिक्त स्वंय के लिए चिन्तशील तथा शान्त भाव से बैठने वाले होते है ये एक अच्छे लेखक हो सकते हैं पन्तु वक्ता नहीं होते हैं।

इसके विपरीत बहिर्मुखी व्यक्तित्व वाले बालकों की निम्न विशेषताऐं होती है :–

अन्तर्मुखी की तुलना में अधिक कार्यकुशल होता है वातावरण के साथ आसानी से अनुकूल कर लेते है। आत्म चिन्तनशील नहीं होते है। धारा प्रवाह बोलते तथा सबको प्रसन्न करने वाले होते हैं। ये व्यवहार कुशल होते हैं। स्वयं की पीड़ा की चिन्ता नहीं करते है ये चिन्तामुक्त रहते है।

अलग–अलग व्यक्तित्व के बालकों में अलग–अलग प्रकार की चिन्ताओं का स्तर होता है तथा बालकों के किशोरावस्था में प्रवेश करने पर उनकी चिन्ताओं का स्तर बदल जाता है क्योंकि इस अवस्था में बालक शारीरिक परिवर्तनों के दौर से गुजरता है।

किशोरावस्था व्यक्तित्व के विकास की सबसे जटिल अवस्था है। इस काल में बालकों में परिपक्वता का आना था। प्रजनन क्षमता का विकास होता है। इस काल में बालक मानसिक तथा भावनात्मक परिवर्तन के दौर से गुजरता है। किशोरावस्था व्यक्तित्व निर्माण की प्राथमिक अवस्था है। इस काल में बालक या तो कुछ बनता है या बिगड़ता है। यह असुरक्षा तथा आत्मविश्वास के मध्य तेजी से बदलाव की अवस्था है। इस अवस्था में अभिभावक, शिक्षक व समाज से उम्मीद की जाती है कि वे किशोर विद्यार्थियों को उनके लक्ष्य प्राप्ति में सहायता करें ताकि वे अपनी पहचान बनाने में सफल हो सकें तथा एक बेहतर समाज का निर्माण करने में सफल हो सके जिससे कि एक बेहतर राष्ट्र निर्माण में सहायता मिल सके।

क्योंकि किशोरावस्था ही ऐसा काल है जिसमें विद्यार्थियों के मन में अत्यधिक प्रश्न उठते हैं तथा उनको जानने की जिज्ञासाऐं प्रबल होती है। इस काल में विद्यार्थियों के मन में कई प्रकार के संशय उत्पन्न होते हैं ये सक्षय उनकी इच्छाओं तथा रूचियों को समाप्त कर देते है। यदि उन्हें उचित मार्गदर्शन दिया जाए तो अपनी रूचियों के अनुकूल कार्य करके सफलता को प्राप्त करेंगे। ज्यादातर युवा आने भविष्य को लेकर चिंतित रहते है। विद्यार्थी जो 10 वीं उत्तीर्ण करने के पश्चात 10+2 में विषय चयन करने में ,तथा उच्च शिक्षा के क्षेत्र में, सही पाठ्यक्रम के चयन में पंसंदीदा रोजगार के चयन में सही निर्देशन के अलावा अपने आप को असहाय से महसूस करते है। यही परिस्थितिया ग्रामीण क्षेत्रों में और भी अधिक विकट है क्योंकि माता–पिता का असाक्षर होना। आगे बढ़ते कदमों को सही दिशा व उचित निर्देश के अलावा की वजह से स्वर्णिम भविष्य को खोना पड़ सकता है।

हर बालक यह सोचता है कि एक दिन वह भी सफल व्यक्तियों के समान जीवन में कुछ करेगा उसके पास भी सभी सुख–सुविधाऐं होगी जो कि एक सफल व्यक्ति के पास होती है। इसी आकांक्षा अथवा उद्देश्य को ध्यान में रखते हुए विद्यालय शिक्षक तथा माता–पिता का यह कर्तव्य बन जाता है कि शिक्षा के साथ–साथ बालकों के लिए ऐसी शिक्षा की व्यवस्था करें जिससे वह बेरोजगार न रहें। राष्ट्रीय शिक्षा

नीति में भी इसी बात पर बल दिया गया कि पाठ्यक्रम में व्यावसायिक शिक्षा को जोड़ा जाऐं जिससे शिक्षा रोजगारोन्मुख बने तथा इससे उच्च शिक्षण संस्थानों पर दबाव कम होगा। रोजगार के अवसर अधिक उपलब्ध होंगे। मानव शक्ति की मांग व पूर्ति में संतुलन बना रहेगा। इससे योग्य किशोर विद्यार्थी अवसरों का समूचित लाभ उठा पाऐंगे। तथा अपनी योग्यता, क्षमता तथा सार्मथ्य के अनुसार आत्मविश्वास व योजनाबद्ध तरीके से अपने लक्ष्य की प्राप्ति करेंगे।

क्योंकि उनके पास अपना लक्ष्य होगा तथा लक्ष्य पर पहुँचने के लिए उचित अवसर होंगे। अतः विद्यालयों को विभिन्न पाठ्यक्रमों, व्यवसायिक प्रशिक्षण सुविधाओं, कम्प्यूटर, सूचना प्रौद्योगिकी ऐसे क्षेत्रों में पाठ्यक्रमों का संचालन करना होगा। इससे बालक अपनी व्यावसायिक रूचियों को अभिव्यक्त कर पाएगा। उसकी पसंद अथवा नापसन्द पर कोई अपने विचार नहीं थोपेगा।

जिन बालकों के व्यक्तित्व का विकास सही ढ़ंग से नहीं होगा तथा जिन बालकों को अपनी शिक्षा तथा सार्म्थय पर जरा सा भी विश्वास नहीं होगा कि वे जीवन में कुछ कर पाऐंगे या वो इसके काबिल भी है वो मानसिक अवसाद से घिर जाऐंगे। उनका मन अनुचित विचारों तथा चिंताओं से घिर जाएगा। ऐसे बालक दुश्चिंताओं से पीड़ित हो जाएगा। उनमें अपने कैरियर के प्रति डर, अच्छे नम्बर प्राप्त करने के प्रति डर या किसी भी अन्य प्रकार का भय या चिंता घर कर जाऐंगी। चिंता तथा भय का स्तर अलग–अलग प्रकार के बालकों में अलग–अलग स्तर का होगा। अतः उचित मार्गदर्शन द्वारा अन्तर्मुखी बालकों का भविष्य उज्जवल बनाया जा सकता है। जिससे उनके जीवन में दुश्चिंताओं के स्तर को कम किया जा सकेगा।

समस्या का औचित्य :–

भारत वर्ष में आजादी के पश्चात् शिक्षा के क्षेत्र में अभूतपूर्व क्रान्ति आई है। आज हर गाँव और गली में विद्यालय की उपसिथति इसका संकेत है। प्राथमिक शिक्षा से उच्च शिक्षा प्राप्त करने की सुविधा देश में विद्यार्थियों को उपलब्ध है। फिर भी

आज के अधिकांश युवा अपने भविष्य को लेकर चिंतित प्रतीत होती है। यह चिंता उनकी 10 वीं उत्तीर्ण करने के पश्चात् विषय चयन में, उच्च शिक्षा क्षेत्र में पसंदीदा व्यवसाय चयन में सही पाठ्यक्रम के चयन को लेकर है कई विद्यार्थी योग्य व मेधावी होने पर भी उचित निर्देशन के अभाव में तनाव का शिकार हो रहे हैं।

अतः उपरोक्त शोध द्वारा बालकों के व्यक्तित्व अनुसार उनकी रूचियों तथा आकांक्षाओं का अध्ययन कर उन्हें सही पाठ्यक्रम के चयन के लिए प्रोत्साहन मिलेगा जिससे वे अपनी पसंद के अनुसार अपनी व्यावसायिक रूचियों का चयन कर पाएगी तथा इस कारण उनकी दुश्चिंताओं का स्तर भी कम होगा।

अनेको अध्ययन भी इस विषय से सम्बन्धित विभिन्न पक्षों पर किए गए है जिनका उल्लेख निम्नलिखित है :–

1. अन्तर्मुखी एवं बहिर्मुखी व्यक्तित्व आधारित अध्ययन :–

(A) देव. सी तथा गौर नीना (2006)[60] कार्यशील व घरेलु महिलाओं के 14–18 आयु वर्ग के बालक व बालिकाओं के व्यक्तित्व का तुलनात्मक अध्ययन उदयपुर में किया। शौज के निष्कर्ष मे पाया कि बहि मुखी बालको की तुलना मे अन्तर्मुखी बालकों का सवेगात्मक समायोजन अधिक उत्तम होता है। कार्यशील महिलाओं के बालको की अपेक्षा घरेलु महिलाओं के बालको का समायोजन अधिक उत्तम पाया गया। इसके विपरित कार्यशाी महिलाओं की बालिकाओं का समायोजन अधिक उत्तम पाया। उसके लिए उन्होने सिन्हा एवं सिह व पत्र का उपयोग किया।

(B) देवी निर्मला(2011) व्यक्तित्व एवं उपलब्धि प्रोत्साहन के मध्य संबधो पर किए गए शोध मे पाया कि उपलब्धि प्रोत्साहन का समायोंजन पर कोई प्रभाव नही होता हैं बर्हिमुखी का समाज, स्कूल में समायोजन, साधारण समायोजन में धनात्मक संम्बध होता हैं जबकि अन्तमुखी का समाज, स्कूल में त्रणात्मक संबंध होता हैं।

(C) कानेकर 1972 ने अपना अध्ययन नागपुर विश्वविद्यालय के 80 विद्यार्थियों पर किया मौसम के अनुसार जन्म लेने के प्रभाव को उनकी अन्तर्मुखी व बहिर्मुखी व्यक्तित्व तथा उनकी बुद्धिमता से लगाया।

(D) लक्ष्मी विजय (1996) 36 ने पटना के अन्तर्मुखी तथा बहिर्मुखी विद्यार्थियों की शैक्षिक रूचियों का अध्ययन शीर्षक पर शोध में पाया कि बहिर्मुखी विद्यार्थियों की रूचियों का अध्ययन शीर्षक पर शोध में पाया गया कि बहिर्मुखी विद्यार्थियों की रूचियाँ यांत्रिक, सामाजिक, व्यापार तथा बाह्र क्रियाओं में अधिकता प्राप्त हुई है। जबकि अन्तर्मुखी व्यक्तित्व के विद्यार्थियों में वैज्ञानिक सौन्दर्यात्मक तथा लिपीकीय में अधिक रूचि रखते हैं।

(E) मंगेश कुलकर्णी तथा राठौड़ एस. (2005) 17 से 20 वर्ष के छात्र व छात्राओं के व्यक्तित्व के प्रकार का अध्ययन शीर्षक पर शोध किया।

(F) कादरी मोहम्मद अकबर्रुल (2014)

ड़ॉ सतीश कुमार कालोतरा ने दसवी कक्षा के अन्तर्मुखी एवं बहिर्मुखी लड़को के मध्य संबंधो पर अध्ययन किया। अपने के लिए 50 विद्यार्थीयों को चुना। उन्होने पाया कि बहिर्मुखी एवं शैक्षिक उपलब्धता के मध्य धनात्मक सहंसबंध पाया जाता हैं। अन्तर्मुखी एवं शैक्षिक उपंलब्धता में त्रणात्मक सहंसंबंध पाया जाता हैं।

(G) शिल्पी (2011) ने अपना अध्ययन अर्न्तमुखी–बहिर्मुखी और उनकी शैक्षिक उपलबधियों के मध्य किया। अपने शोध के लिए रेवारी जिले मे कार्य करने वाली महिलाओं व घरेलु महिलाओं के 20 बच्चों को चुना। अपने शोध में पाया कि व्यक्तित्व का प्रभाव परीक्षा में प्राप्त अंको पर पड़ता हैं। यह उनकी शैक्षिक उपलबधि को निशिचित करता हैं। काम करने वाली महिलाओं के बच्चें ज्यादा अच्छा प्रदर्शित करते हैं।

(H) सिंह एन (2011) ने "अभिभावक पालन पोषण शैली तथा अनुशासन उन्मुकता का अध्ययन" शीर्षक में शोध मे पाया कि माता–पिता की पालन–पोषण शैली तथा अनुशासन उन्मुखता किशोर बालको को स्वस्थ जीवन प्रदान करती हैं। माता–पिता तथा उनके बालको के मध्य संबंध जितना उत्तम होता हैं उतना ही बालकों के व्यक्तित्व का विकास उत्तम होता हैं।

(I) सिंह, शैलेन्द्र, तथा कालरा, दलजीत (2010)79 ने महाविद्यालय के विद्यार्थियों की सृजनात्मकता तथा व्यक्तित्व का अध्ययन ''शीर्षक या शोध किया। अध्ययन के निष्कर्ष में इन्होंने पाया कि अन्तर्मुखी व्यक्तित्व की अपेक्षा बहिर्मुखी व्यक्तित्व के विद्यार्थियों में सृजनात्मकता सार्थक रूप से उच्च ज्ञात हुई।

व्यावसायिक रूचियों से संबंधित अध्ययन :–

डॉ. एस.पी. कुलश्रेष्ठ द्वारा निर्मित व्यावसायिक रूचि प्रपत्र परीक्षण लिया जिसके अन्तर्गत

1. अनुराधा शर्मा एण्ड महेश भार्गव '' करियर मैच्यूरिटी अमंग इन्टरमिडीएट स्टूडेन्टस ऑफ कॉमर्स, बायलोजी, ग्रुप, जनरल ऑफ एज्यूकेशन, रिसर्च एण्ड एक्सटेन्शन वॉल्यूम 31-72 : 118-123 (1994)
2. भोजक और मेहता (1969) इन्होने जोधपुर के सात उच्चतर माध्यमिक विद्यालयों के 10 वी कक्षा के 120 छात्र एवं 120 छात्राओं की व्यावसायिक रूचियों का अध्ययन किया। ये विद्यार्थी अलग–अलग सकायों अर्थात (कला एवं विज्ञान वर्ग) से संबंधित थे। अध्ययन शोध में पाया कि सभी विषय वर्ग के विद्यार्थियों मे समाजसेवा, साहितियिक, वैज्ञानिक क्षेत्रों में उच्च प्राथमिकता थी जबकि यांत्रिक, कलात्मक, सगीत क्षेत्रों मे लड़के और लड़कियों के बीच मध्यांक अन्तर थें।

3. किरण पारीक (1990) 12 वीं स्तर के विद्यालयों में अध्ययनरत 11 वीं कक्षा के विद्यार्थियों के विषय में चयन में अभिरूचियों एवं अभिव्यक्तता की भूमिका का अध्ययन । एम.एड. डेजरटेशन वनस्थली विद्यापीठी।

4. नित्यानन्द प्रधान एण्ड श्री लेख :– वोकेशनल इन्टरेस्ट ऑफ हाई सैकेण्डरी गर्ल्स स्टूडेन्ट्स इन रिलेशन टू देयर स्ट्रीम ऑफ एज्यूकेशन'' द प्रोग्रेस ऑफ एज्यूकेशन वाल्यूम LXX (4) : 70-80 (NOV 1995)

5. निशा शर्मा (1987) बौद्धिक योग्यता के सन्दर्भ में विद्यार्थियों की व्यवसायिक रूचियों का अध्ययन किया।

न्यादर्श के लिए :– जयपुर केन्द्रीय विद्यालय के प्रतिभाशाली और सृजनशील छात्र–छात्राओं को लिया ।

निष्कर्ष :– सृजनशील बालकों की रूचि भौतिक एवं मानवीय, कला, सगीत, क्षेत्र मे अधिक थी। जबकि प्रतिभाशाली और सृजनशील छात्राओं कि रूचियों मे अन्तर पाया गया। निम्न सृजनशील छात्राओं की रूचि निम्न बुद्वि वाली छात्राओं की तुलना में भौतिक, साहित्यीक व मानवीय क्षेत्रों मे पायी गई। निम्न बुद्वि वाले छात्रों की रूचि भौतिक क्षेत्र में अधिक पायी गई हैं। उच्च सृजनशील छात्राओं की रूचि भौतिक, कला, सगींत के क्षेत्र में पायी गई हैं। निम्न सृजनशील छात्रो की रूचि प्रशासकीय क्षेत्रों मे तथा छात्राओं की रूचि सगीत के क्षेत्र में अधिक पायी गई।

6. प्रधान एवं दवे (1995) विभिन्न शैक्षिक धाराओं में अध्ययनरत उच्च माध्यमिक छात्राओं की व्यावसायिक रूचि का तुलनात्मक अध्ययन किया। निष्कर्ष निकाला कि कला, विज्ञान, वाणिज्यक में अध्ययनरत उच्च माध्यमिक छात्राओं के बीच साहित्यिक, वैज्ञानिक, सामाजिक सेवा, कलात्मक व संरचनात्मक तथा गृह व्यवस्था संबंधी गतिविधियों मे उनकी रूचियों में सार्थक अन्तर हैं तथा बाहरी गतिविधियों, यात्रिक, लिपिकीय, प्रशासकीय और शिक्षण गतिविधियों में रूचि के संबंध में विज्ञान, कला एवं वाणिज्यक में अध्ययनरत उच्च छात्राओं के मध्य सार्थक अन्तर नही हैं

ज्यादातर बच्चे बहिर्मुखी व्यक्तित्व के होते एवं अन्तर्मुखी बच्चे कम संख्या मे होते हैं। व्यक्तित्व तथा दुश्चिताओं के मध्य सकारात्मक संबंध होता हैं।

(B) गांधरी ए आर कुमार जी, वेकर्टश कुमार सम्पत (2009) ने भारतीय तथा ईरानी छात्रों के मध्य ड़िप्रेशन एन्जाइटीय व स्ट्रेस पर अध्ययन किया। ड़ेटा के लिए मैसूर के कॉलेज में पढ़ने वाले विभिन्न विषयों के विद्यार्थियों को लिया उन्होने पाया कि भारतीय छात्रों की तुलना में ईरानी छात्रों मे ज्यादा एनजाईटीय व स्ट्रेस लेवल होता हैं

(C) हुसैन एस(1985) ने "विद्यार्थियों के समायोजन तथा चिन्ताग्रस्तता" शीर्षक पर शोध कार्य किया। अध्ययन के निष्कर्ष में उन्होने पाया कि अधिक चिन्ताग्रस्त विद्यार्थियों का समायोजन विभिन्न क्षेत्रों मे निम्न स्तर का होता हैं तथा इसके विपरित अधिक आत्मबल से परिपूर्ण छात्रो का समायोजन अच्छा पाया गया हैं।

(D) लरमोर (2011) जनरल एन्जायटी एण्ड एकेडेमिक इन्डीकेटर्स ऑर प्रेडीकेटर्स ऑफ टेस्ट एन्जायटी इन एडेलॉसेन्ट

ऐड़ेलोसेन्ट पर सामान्य दुश्चिता और उपलबधियों का अध्ययन कर पाया कि लिंग परिवर्तन का दुश्चिता व उपलबधि पर प्रभाव नही पड़ता।

(E) मिश्रा समीता (2014) :– शोध का उद्वेश्य बालक व बालिकाओं में दुश्चिताओं व उपलबधियों के मध्य संबंधों का अध्ययन करना था। अपने न्यार्दश में 400 बालक व बालिकाओं का चयन रेण्ड़म सैमपलिगं द्वारा किया गया। दुश्चिता के मापन के लिए सिन्हा के टैस्ट का उपयोग किया गया।

(F) नदीम मोहम्मद अली अख्तर मैगबॉल सायरा एण्ड जायदी सैयदा उज्मा (2012): एम ऑफ प्रजेण्ट स्टडी द इम्पेक्ट ऑफ एनजाइटी ऑन द एकेडेमिक एचीवमेन्ट ऑफ स्टूडेन्ट ऑफ यूनिवर्सिटी लेवल।

(G) सिंह, साक्षी कला (2013) :– अपने शोध में उच्च तथा मध्यम अंक प्राप्त करने वाले विद्यार्थियों पर दुश्चिता व समायोजन के प्रभावों का अध्ययन किया। अपने न्यार्दश के लिए 100 ट्रायवल कॉलेज छात्रों का चयन किया। छात्राओं

का चयन रेण्ड़म सैम्पलिंग द्वारा किया गया। उन्होंने पाया कि अच्छे अंक प्राप्त करने वाले छात्रों में दुशचिन्ता का स्तर अपेक्षाकृत अधिक होता हैं।

विदेशों में हुए अध्ययन :–

(A) एलिजाबेथ (1955) उच्च सामाजिक आर्थिक स्तर के छात्र पर निम्न सामाजिक आर्थिक स्तर के छात्रों से ज्यादा व्यावसायिक रूचियों में स्तर का प्रभाव पड़ता है।

(B) डाबरसैक पू. तथा बार्टलिंग कार्ल (2008) [93] ने व्यक्तिव प्रकार तथा खेलकूद के मध्य सम्बन्ध का अध्ययन शीर्षक पर शोध कार्य किया। अध्ययन के निष्कर्ष में पाया कि टीम के खिलाडी अधिक चिन्ता स्तर रखते हैं । जबकि व्यक्तिगत खेल के खिलाडी तुलनात्मक रूप से निम्न चिंता स्तर रखते हैं।

(C) हाइमन (1956) सामाजिक सेवा सम्बन्धी रूचि प्रतिभाशाली उच्च एवं मध्यम वर्ग के लड़कों से बहुत ज्यादा पाई गई परन्तु बराबर बुद्धि के मध्यम वर्ग के लड़कों में यह रूचि कम मात्रा में पाई गई।

(D) मोजर (1954) इन्होंने अपने एक अध्ययन में पाया कि हाई स्कूल के विद्यार्थी जिनके माता पिता उच्च शिक्षा प्राप्त है उच्च स्तरीय नौकरी को पसन्द करते हैं।

(E) नदीम मोहम्मद अली 2012 इन्होंने एकेडमिक एचीवमेन्ट पर एन्जाइटी के प्रभाव का अध्ययन किया। उन्होंने अपने अध्ययन में दुश्चिन्ताओं का शैक्षणिक उपलब्धि पर पडने वाले प्रभाव का अध्ययन किया। उन्होंने पाकिस्तान में बाबलपुर का चयन किया। अपने सर्वे के लिए 200 विद्यार्थियों का चयन किया , जिनमें से 97 बच्चों का चयन स्ट्रेटीफाईड सेम्पलिंग के जरिए किया। डेटा का संग्रहण शोध प्रश्नों तथा दुश्चिन्ता मापक स्केल द्वारा किया गया। शोध में पाया कि जैसे –जैसे दुश्चिंता का स्तर बडता हैं वैसे –वैसे शैक्षणिक उपलब्धि घटती हैं चाहे महिला हो या पुरूष।

(F) स्ट्रांग (1948) इन्होंने सर्वप्रथम स्पष्ट रूप से बताया कि रूचियों का सम्बन्ध सामाजिक आर्थिक स्तर से होता है जबकि पूर्व अध्ययनों ने भी यह निष्कर्ष निकाला की व्यवसायिक चुनाव और सामाजिक आर्थिक स्तर आपस में संबंधित है।

इस प्रकार उपरोक्त शोध कार्यों पर दृष्टि डालने से स्पष्ट होता है कि अब तक अन्तर्मुखी एवं बहिर्मुखी व्यक्तित्व वाले किशोर की दुश्चिंताओं तथा व्यवसायिक रूचियों का एक साथ अध्ययन पूर्व में नहीं किया गया है। अतः शोधार्थी ने अपने शोध के माध्यम से समस्या के चयन में दिशा मिली। अन्तर्मुखी व्यक्तित्व वाले किशोरों की दुश्चिंताओं तथा उनकी व्यावसायिक रूचियों के अध्ययन का प्रयास किया ।

वर्तमान में किशोरो को बेहतर शिक्षा के साथ बिना तनाव व डर के बेहतर रोजगार मिले तथा उन्हें सही दिशा में आगे बढ़ने के अवसर उनके हाथ से न निकले। इस विषय पर जानकारी प्राप्त करने व खोज करने की इच्छा होने के कारण कुछ प्रश्न शोधार्थी के मन में उठे :–

1. क्या अन्तर्मुखी तथा बहिर्मुखी व्यक्तित्व वाले किशोर विद्यार्थियों की दुश्चिंताओं में अंतर पाया जाता है।
2. क्या अन्तर्मुखी तथा बहिर्मुखी किशोरों की व्यावसायिक रूचियों में अंतर पाया जाता है।
3. क्या परिवेश भिन्नता (शहरी व ग्रामीण) का प्रभाव किशोरी की रूचियों व व्यावसायिक रूचियों पर पड़ता है।
4. क्या लिंग भेद के आधार पर किशोरो की दुश्चिंताओं एवं व्यावसायिक रूचियों में अन्तर पाया जाता है।
5. इन्हीं दुश्चिंताओं के अंतर खोजने का प्रयास प्रस्तावित शोध कार्य में किया जाएगा।

शोध समस्या के उद्देश्य :– अन्तर्मुखी एवं बहिर्मुखी व्यक्तित्व वाले किशोर विद्यार्थियों को दुश्चिंताओं एवं व्यावसायिक रूचियों का अध्ययन निम्नांकित बिन्दुओं के सन्दर्भ में करना :–

(A) अन्तर्मुखी एवं बहिर्मुखी व्यक्तित्व वाले किशोर विद्यार्थियों की दुश्चिंताओं एवं व्यावसायिक रूचियों का अध्ययन लिंग भेद के आधार पर किया जाएगा।

(B) अन्तर्मुखी एवं बहिर्मुखी व्यक्तित्व वाले किशोर विद्यार्थियों की दुश्चिंताओं एवं व्यावसायिक रूचियों का अध्ययन परिवेश भिन्नता के आधार पर किया जाएगा।

(C) प्राप्त निष्कर्षों के आधार पर सुझाव प्रस्तुत करना।

परिकल्पनाएँ :–

(I) **सम्प्रत्यात्मक परिकल्पना** :– अन्तर्मुखी एवं बहिर्मुखी व्यक्तित्व वाले किशोर विद्यार्थियों में लिंग भेद के सन्दर्भ में दुश्चिंताओं एवं व्यावसायिक रूचियों में सार्थक अन्तर नहीं होता।

1. अन्तर्मुखी एवं बहिर्मुखी व्यक्तित्व वाले किशोर लड़कों में उनकी व्यावसायिक रूचियों और दुश्चिंताओं में सार्थक अन्तर नहीं होता है।
2. अन्तर्मुखी एवं बहिर्मुखी व्यक्तित्व वाले लड़कियों की व्यावसायिक रूचियों और दुश्चिंताओं में सार्थक अन्तर नहीं होता।

(II) **सम्प्रत्यात्मक परिकल्पना** :– परिवेश भिन्नता के संदर्भ में सार्थक अन्तर नहीं होता है।

1. शहरी किशोर बालक व बालिकाओं की व्यावसायिक रूचियों एवं दुश्चिंताओं में सार्थक अन्तर नहीं होता।
2. ग्रामीण क्षेत्रीय किशोर बालक व बालिकाओं की व्यावसायिक रूचियों एवं दुश्चिंताओं में सार्थक अन्तर नहीं होता।

सम्प्रत्ययों की व्याख्या :–

1. अन्तर्मुखी एवं बहिर्मुखी : प्रस्तावित शोध ने निर्मित परीक्षण के आधार पर अन्तरर्मुखी एवं बहिर्मुखी की व्याख्या की गई है।
2. व्यावसायिक रूचियों :– कुलश्रेष्ठ द्वारा निर्मित व्यावसायिक परीक्षण प्रपत्र के आधार पर इस व्यावसायिक क्षेत्र की रूचियों का अध्ययन किया गया है। साहित्यिक, वैज्ञानिक, प्रशासकीय, वाणिज्यिक, रचनात्मक, कलात्मक, कृषि अनुसंधानात्मक, सामाजिक तथा गृह सम्बन्धी क्षेत्र।
3. किशोर विद्यार्थी :– किशोर विद्यार्थियों से तात्पर्य कक्षा 10, 11 व 12 में अध्ययनरत छात्र एवं छात्राओं से है।
4. लिंग भेद :– कक्षा 10, 11 व 12 में अध्ययनरत छात्र एवं छात्राओं से है।
5. परिवेश :– शहरी व ग्रामीण परिवेश से है।

शोध विधि :–

समस्या का सावधानीपूर्वक अध्ययन करने एवं उसे पूर्ण रूप प्रदान करने हेतु यह अनिवार्य है। समस्या के अनुरूप ही विधि का चयन किया जाए। अतः शोधार्थी ने अपनी समस्या के उद्देश्यों को ध्यान में रखते हुए सर्वेक्षण विधि को उपयुक्त माना है।

सर्वेक्षण विधि द्वारा मुख्यतः वर्तमान के स्वरूप का अध्ययन किया जाता है और भावी सुधार हेतु सुझाव प्रस्तुत किए जाते है। सर्वेक्षण विधि में तीन प्रकार की सूचनाओं का संकलन किया जाता है।

1. क्या चीज विद्यमान है ?
2. हम क्या चाहते है ?
3. इच्छित उद्देश्य को कैसे प्राप्त कर सकते है ?

प्रस्तावित शोध का न्यादर्श :–

प्रत्येक शोधकार्य हेतु जनसंख्या का निर्धारण आवश्यक है क्योंकि इसी जनसंख्या से तथ्यों एवं प्रदत्तों का संकलन किया जाता है। अतः यह उन सभी प्रेक्षणों का सप्रत्यय है। जिनमें एक या अधिक विशेषताऐं उभयनिष्ठ है तथा जो किसी अध्ययन का विषय है।

शोधार्थी ने न्यादर्श के रूप में टोंक जिले के ग्रामीण व शहरी क्षेत्रों में स्थित विद्यालयों का चयन किया है।

राज्य– राजस्थान

जिला –टोंक

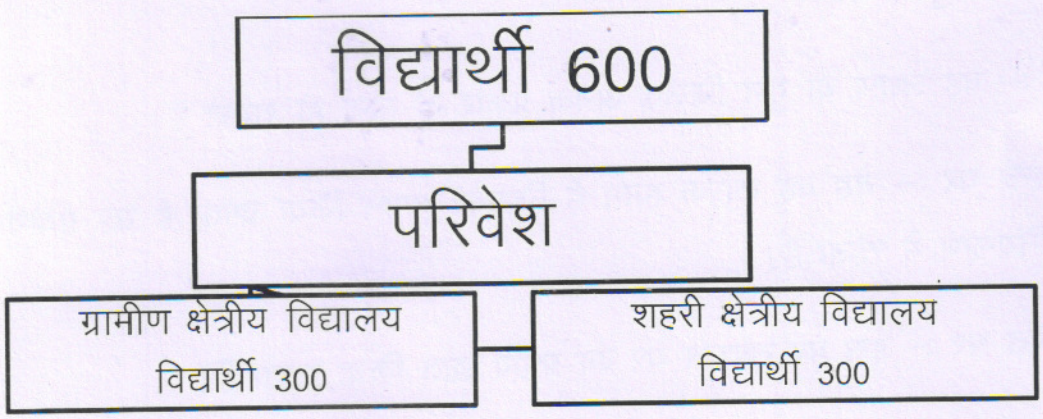

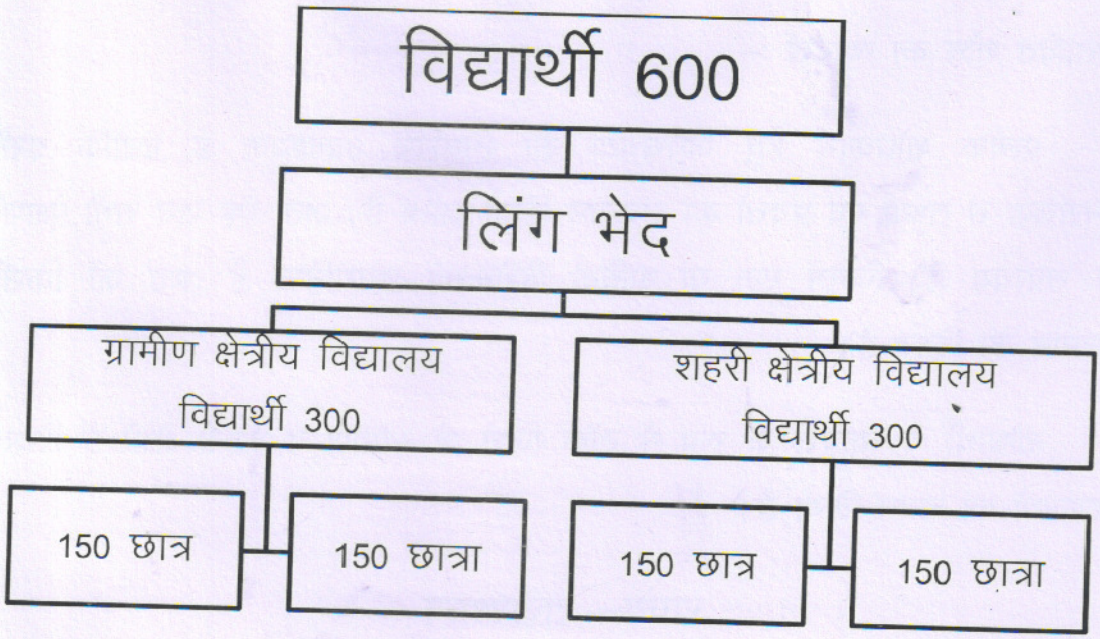

शोध में प्रयुक्त चर :–

चर :– वह लक्षण या गुण जिसके अनेक प्रकार के मूल्य हो सकते है।

स्वतंन्त्र चर :– यह वह कारक होता है जिसका मापन किया जाता है यह प्रयोगकर्ता के नियन्त्रण में रहता है।

आश्रित चर :– इस पर स्वतन्त्र चर का प्रभाव ज्ञात किया जाता है।

मध्यवर्ती चर :– अनेक ऐसे अर्मूत चर होते है जो स्वतन्त्र व आश्रित चर के मध्य क्रियाशील रहते हैं।

प्रस्तावित शोध अध्ययन में निम्नांकित स्वतंत्र चर है :–

1. लिंग भेद
2. परिवेश भिन्नता

आश्रित चर :– किशोर विद्यार्थियों की दुश्चिंता और व्यावसायिक रूचियाँ।

तथ्य संकलन हेतु प्रयुक्त उपकरण :–

		Tool
1.	वाई सिंह एण्ड एच.एम. सिंह, परसोनलिटी इन्वेन्टरी	एक्सट्रोवर्ट इन्ट्रोवर्ट
2.	ए कुमार जनरल एन्जायटी स्केल	एन्जायटी
3.	पी. कुलश्रेष्ठ वाकेशनल इन्टरेस्ट	वोकेशनल इन्टरेस्ट

प्रदत्त विश्लेषण विधि :– प्रस्तावित शोध अध्ययन में प्रदत्तों का विश्लेषण गुणात्मक एवं मात्रात्मक दोनों आधारों पर किया जाएगा।

प्रस्तावित शोध की परिसीमाएँ :–

1. प्रस्तावित शोध में वाई. सिंह और एच.एम. सिंह के परिक्षण प्रपत्रों के आधार ही अंर्तमुखी एवं बहिर्मुखी वयक्तिव का परीक्षण किया जायेगा।
2. प्रस्तावित शोध में प्राइवेट मान्यता प्राप्त विद्यालयों ही लिया जाएगा।
3. मात्र हिन्दी माध्यम वाले विद्यालयों को लिया जाएगा।

शोध प्रक्रिया :– प्रस्तावित शोध निम्नलिखित सोपानों में सम्पन्न किया जाएगा।

1. प्रथम सोपान :– सर्वप्रथम टोंक जिले के शहरी व ग्रामीण क्षेत्रों के विद्यालयों की सूची प्राप्त करके तद्नुसार विद्यालयों का चयन किया जाएगा।

2. द्वितीय सोपान :– शहरी व ग्रामीण विद्यालयों के विद्यार्थियों की लिंगानुसार सूची तैयार की जाएगी।
3. तृतीय सोपान :– विद्यालय के प्रार्थीयों से प्रदत्तत संकलन हेतु परीक्षण की तिथी निर्धारित कर विद्यालय में परीक्षण प्रशासित किया जायेगा।
4. चतुर्थ सोपान :– परीक्षणों से प्राप्त प्रदत्त उनकी लिंगानुसार, परिवेशानुसार, सारणियाँ तेयार की जायेगी।
5. पंचम सोपान :– प्रदत्तों का विश्लेषण एवं व्याख्या परिणात्मक व गुणात्मक रूप में प्रस्तुत की जायेगी।
6. षष्ठम सोपान :– इस सोपान में उपलब्धियाँ निष्कर्ष आधारित सुझाव शैक्षिक फलितार्थ तथा आगामी अध्ययन हेतु सुझाव प्रस्तुत किए जायेंगे।
7. सप्तम् सोपान :– अन्त में शोध सारांश प्रस्तुत किया जाएगा।

प्रस्तावित शोध अध्ययन के अध्यायों का संगठन :–

प्रस्तावित शोध निम्नलिखित अध्यायों में संगठित किया जाएगा :–

प्रथम अध्याय : इसके अन्तर्गत

1. शोध समस्या की सम्प्रत्यात्मक पृष्ठ भूमि ।
2. समस्या का औचित्य
3. समस्या कथन
4. अध्ययन के उद्देश्य
5. परिकल्पनाऐं
6. परिसीमाएँ

द्वितीय अध्याय :– इस अध्याय में शोध से संबंधित साहित्य का पुनरावलोकन का उल्लेख किया जाएगा।

तृतीय अध्याय :– इस अध्याय में शोध आंकलन का विवरण होगा :–

1. शोध विधि
2. न्यादर्श एवं न्यादर्शन
3. प्रदत्तों के स्त्रोत
4. शोध अध्ययन के चर एवं उनका औचित्य
5. प्रयुक्त उपकरण
6. प्रदत्त विश्लेषण हेतु प्रयुक्त सांख्यिकी

चतुर्थ अध्याय :– प्रदत्तों का प्रदर्शन, विश्लेषण

पंचम अध्याय :– इसमें उपलब्धियाँ, निष्कर्ष एवं निष्कर्ष आधारित सुझाव

षष्ठम् अध्याय :– शोध सारांश प्रस्तुत किया जाएगा।

संदर्भ ग्रन्थ सूची

बुक्स :–

1. एलिजाबेथ वी. हरलॉल , (2003) , चाइल्ड डवलपमेन्ट; तारा मेंग्रहिल बुक कम्पनी न्यू देहली (छठा संस्करण)
2. बायतो जमनालाल (2006) ; बाल विकास : समस्या और समाधान : अग्रवाल प्रकाशन, न्यू देहली।
3. बेगम जहीथा ए तथा भार्गव महेश (2008) ; इनोवेशन इन मॉडर्न एजुकेशन रिसर्च ; राखी प्रकाशन आगरा – 2
4. भार्गव , विवेक, गंगाराम, शर्मा मुकेश (2004); शिक्षा मनोविज्ञान ; एज.पी. भार्गव बुक हाउस आगरा।
5. भट्नागर, सुरेश (1976) शिक्षा मनोविज्ञान इंटरनेशनल प्रकाशन मेरठ।
6. बुल एम.बी. (1971) : ए सर्वे ऑफ रिसर्च इन एजुकेशन केस बड़ौदा (प्रथम सर्वे)

7. चौहान एस.एस. (1990) ; एडवास्ड एजुकेशनल साइकॉलोजी ; विकास प्रकाशन, न्यू देहली।

8. देधा, ज्योति एण्ड खान मोहसीन अली (2014); रिलेशनशिप बिटवीन पर्सनेलिटी ट्रेट एण्ड एन्जाईटी अमंग स्टुडेन्ट ऑफ CBSE रिलॉगनाइज्ड सीनियर सैकेण्डरी स्कूल, जनरल ऑफ टीचर एज्युकेशन एण्ड रिसर्च Vol. 9, No. 1 P.P. 6-13

9. जर्सिल्ड ए.टीत्र (1963) दि साइकॉलोजी ऑफ एडोलेसेंस ; दि मैकेमिलन कं. लि. लंदन।

10. कुप्पू स्वामी, वी (1963) ; एडवांस्ड एजुकेशनल साइकॉलोजी, जालंधर यूनिवर्सिटी प्रकाशन, जालंधर।

11. कलहोत्तरा कुमार, सतीश एण्ड कादरी, मोहम्मद अकबरूल (2014) ; ए स्टडी ऑफ पैटर्न ऑफ इंट्रो इन्ट्रोवर्सन/ एक्सट्ररोवर्सन अमंग मेल हाई स्कूल स्टूडेन्ट इन रिलेशन टू देअर एकेडमिक अचीवमेन्ट, इलेक्ट्रोनिक इंटरनेशनल इंटरसीप्लीनरी रिसर्च Journal, Vol.3 , Issue 3.

12. लूलाकोल (1962), साइकॉलोजी ऑफ एडोले सैन्स ; हाल्टरिया हार्ट एण्ड संस न्यूयार्क।

13. मिश्रा समिता (2014) ; एन एनेलेब्किल स्टडी ऑफ क्रिएटीविटी इन रिलेशन टू एन्जाइटी ऑफ हाई स्कूल, स्टेण्डर्ड साइंस एण्ड आर्ट्स स्टूडेण्ट Vol -12, No. 1 & 2 , PP. 207-210.

14. एन.सी.ई. आर.टी. (1996) ; एडोलेसेन्स एजूकेशन ; रिपोर्ट ऑफ दि नेशनल सेमीनार, शिक्षा विभाग समान विज्ञान व मानविकी विभाग–देहली।

15. नागी बी.एस. (2001) ; इंट्रोडक्शन ऑफ एडोलेसैंस एजूकेशन इन स्कूल करीकुलम; न्यू देहली।

16. पाठक पी.डी. (2003); शिक्षा मनोविज्ञान, विनोद पुस्तक मंदिर, आगरा।

जर्नल :–

17. पंडीएन, यु. (2013) एडजस्टमेन्ट एण्ड एन्जाइटी ऑफ B.Ed. स्टूडेन्ट – टीचर इन पोंडूचेरी, जनरल ऑफ एड्युट्रक्स Vol. 13 No. 2, PP 23-21
18. शर्मा, एन.आर. तथा कड्वासदा ओम (2007); शिक्षा मनोविज्ञान ; साहित्य चंद्रिका प्रकाशन, जयपुर।
19. सिद्दू , कुलवीर सिंह (1984) ; मेंथडोलोजी ऑफ रिसर्च इन एजूकेशन ; स्टर्लिंग प्रकाशन, न्यू देहली
20. शर्मा सुधीर (1997) ; किशोरावस्था शिक्षण क्यों और कैसे ? राज्य शैक्षिक अनुसंधान एवं प्रशिक्षण परिषद् ; सोलन हिमाचल प्रदेश।
21. श्रीवास्तव डी.एन. (2003) ; अनुसंधान विधियाँ साहित्य प्रकाशन, आगरा।
22. साँखला , डी.पी. (2007) ; रिसर्च मैथडोलॉजी इन एजूकेशन : अध्ययन प्रकाशन, न्यू देहली ।
23. शिल्पी (2011), ए स्टडी ऑफ इन्ट्रोवर्सन – एक्स्ट्रोवर्सन एण्ड एकेडमिक अचीवमेन्ट ऑफ द चिल्ड्रन ऑफ वर्किंग एण्ड नॉन वर्किंग वुमेन, जनरल ऑफ एज्युकेशन एण्ड साइकोलोजिकल रिसर्च Vol. 1, No. 1, P.P. 5-9
24. सिंह, साक्षी कला (2013) , एन्जाइटी एण्ड एडजेस्टमेन्ट पैटर्न ऑफ हाई एण्ड लॉ एकेडैमिक अचीवर, जनरल ऑफ ग्लोबल रिसर्च , एनालाइसिस Vol.2 , Issue : 1,
25. टाडस , रोहिनी वी. (2009), ए स्टडी ऑफ एन्जाइटी लेवल अमंग द रेगुलर B.Ed. Student and ..... Maharastra open University Student द सी.टी.ई. नेशनल जनरल Vol. 7, No. 1

Websites:-

1. https//:www.educationmirror.org
2. https//:upbtcstudy.wordpress.com
3. https//:www.hiquora.com
4. https//:www.healthtime.com